"ताती वाउ" न लगयी

• ੴ सत नाम करता पुरख निरभउ निरवैर अकाल मूरत अजूनी सैभं गुर प्रसाद । (1)

अर्थः- अकाल-पुरख एक है, जिसका नाम 'अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचनहार है, (करता है) जो सभ में व्यापक है, भय से रहित है (निर्भय), वैर से रहित है (निर्वैर), जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव , जिसका शरीर नाश-रहित है), जो योनियों में नहीं आता,जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सत्गुरु की कृपा से मिलता है ।

• सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं - हस्त काया रख्या परमेस्वरह । आतम रख्या गोपाल सुआमी - धन चरण रख्या जगदीस्वरह । सरब रख्या गुर दयालह - भै दूख बिनासनह । भगत वछल अनाथ नाथे - सरण नानक पुरख अचुतह ।

अर्थः- सिर, माथा, हाथ, शरीर, जीवात्मा, पैर, धन-पदार्थ-जीवों की हर तरह से रक्षा करने वाला पारब्रहम, परमेश्वर, गोपाल, स्वामी, जगदीश्वर - सबसे बड़ा दया का घर परमात्मा ही है । वही सारे दुखों का नाश करने वाला है । हे नानक ! वह प्रभू निआसरों का आसरा है, भगती को प्यार करने वाला है। उस अविनाशी सर्व-व्यापक प्रभू का आसरा ले ।

• ताती वाउ न लगई - पारब्रहम सरणाई । चउगिरद हमारै राम कार - दुख लगै न भाई ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा की शरण पड़ने से (व्याधियों का) सेक नहीं लगता। हे भाई ! हम जीवों के चारों तरफ परमात्मा का नाम (मानो) एक लकीर है (जिसकी बरकत से) कोई दुख छू नहीं सकता ।

सतिगुर पूरा भेटिआ - जिन बणत बणाई । राम नाम अउखध दीआ - एका लिव लाई ।

अर्थः- हे भाई ! जिस गुरू ने (परमात्मा का नाम-दवा दे के जीवों के रोग दूर करने की) बिउंत बना रखी है, वह पूरा गुरू (जिस मनुष्य को) मिल जाता है और परमात्मा का नाम दवाई देता है, वह मनुष्य सदा परमात्मा में सुरत जोड़े रखता है ।

राख लीए तिन रखनहार - सभ बिआध मिटाई । कह नानक किरपा भई - प्रभ भए सहाई । (819)

अर्थः- हे नानक ! कह- (जिस मनुष्य को गुरू मिल गया उसको) उस रखवाले प्रभू ने बचा लिया, (उसके अंदर से) हरेक रोग दूर कर दिया, उस मनुष्य पर प्रभू की कृपा हो गई, प्रभू उस मनुष्य का मददगार बन गया ।

• गुर का सबद रखवारे । चउकी चउगिरद हमारे । राम नाम मन लागा । जम लजाइ कर भागा । (626)

अर्थः- हे भाई ! (विकारों के मुकाबले में) गुरु का शब्द ही हम जीवों का रखवाला है, शब्द ही (हमें विकारों से बचाने के लिए) हमारे चारों तरफ पहरा है । (गुरु के शब्द की इनायत से जिस मनुष्य का) मन परमात्मा के नाम में जुड़ता है, उससे विकार तो एक तरफ रहे, जम भी शर्मिंदा हो के भाग जाते है ।

• अउखी घड़ी न देखण देई - अपना बिरद समाले । हाथ देइ राखै अपने कउ - सास-सास प्रतिपाले ।

अर्थः- हे भाई ! (वह प्रभू अपने सेवक को) कोई दुख देने वाला समय नहीं देता, वह अपना प्यार वाला बिरद स्वभाव सदा याद रखता है । प्रभू अपना हाथ दे के अपने सेवक की रक्षा करता है, (सेवक को उसके) हरेक सांस के साथ पालता रहता है ।

प्रभ सिउ लाग - रहिओ मेरा चीत । आद अंत प्रभ सदा सहाई - धंन हमारा मीत ।

अर्थः- हे भाई ! मेरा मन (भी) उस प्रभू से जुड़ा रहता है, जो आरम्भ से आखिर तक सदा ही मददगार बना रहता है । हमारा वह मित्र प्रभू धन्य है (उसकी सदा तारीफ करनी चाहिए) ।

मन बिलास भए साहिब के - अचरज देख बडाई । हरि सिमर-सिमर आनद कर नानक - प्रभ पूरन पैज रखाई । (682)

अर्थः- हे भाई ! मालिक प्रभू के हैरान करने वाले करिश्मे देख के, उसका बड़प्पन देख के (सेवक के) मन में (भी) खुशियां बनी रहती हैं । हे नानक ! तू भी परमात्मा का नाम सिमर-सिमर के आत्मिक आनंद ले । (जिस भी मनुष्य ने सिमरन किया) प्रभू ने पूरे तौर पर उसकी इज्जत रख ली ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"